



एक राजा था। वह बहुत समझदार और धुन का पक्का था। वह जो सोचता उसका हल ढूँढ़कर ही चैन लेता। किसी भी काम में अपनी पराजय उसे बहुत अखरती थी। वह सोचता, क्या उपाय किया जाए, जिससे वह कभी न हारे।

एक दिन उसके मन में तीन सवाल उठे। पहला सवाल था – किसी कार्य को करने का सही समय कौन-सा होता है? दूसरा सवाल था – किसकी बात सुननी चाहिए और किसे टालना चाहिए? और सबसे बड़ा तीसरा सवाल था – सबसे आवश्यक कार्य कौन-सा है?

अपने इन तीन सवालों का उत्तर पाने के लिए राजा ने अपने राज्य में घोषणा करवाई – “जो भी इन तीन सवालों का उत्तर देगा उसे यथेष्ट पुरस्कार दिया जाएगा।” घोषणा होते ही दूर-दूर से लोग राजा के पास आने लगे।

पहले प्रश्न के उत्तर में कुछ लोगों ने कहा – किसी कार्य को शुरू करने से पहले सोचना चाहिए कि कार्य कितने दिन या महीने में पूरा होगा, फिर कार्य करने का समय और तरीका निश्चित करना चाहिए और उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए। ठीक समय पर काम पूरा करने का यही एक सही तरीका है।

कुछ और लोगों का मानना था कि कार्य का समय निश्चित करना कठिन है, लेकिन बेकार के कार्यों में समय नष्ट न करें, जो भी आस-पास हो रहा हो उस काम में लग जायें। कुछ लोगों ने बताया – राजा अकेले प्रत्येक कार्य शुरू करने का समय कैसे निश्चित कर सकता है? राजा के पास सलाहकार होने चाहिए। उनकी सहायता से राजा निश्चित कर सकता है कि कार्य कब और कैसे किया जाए।



लेकिन कुछ और लोग भी थे। उनका कहना था — हर कार्य का समय पहले से सोचना कठिन है। आलस्य में समय न बिताएँ। जो भी काम सामने हो उसे पूरा कर लें। किसी ने कहा कि कभी-कभी सलाह लेने का समय ही नहीं होता, जबकि जवाब तुरंत चाहिए इसलिए उत्तर केवल जादूगर ही दे सकते हैं। बस, वे जादू से सब कुछ जान कर राजा को बता देंगे।

इसी तरह दूसरे सवाल के भी कई जवाब थे। कुछ लोगों का कहना था — राजा के लिए सलाहकार बहुत जरूरी होते हैं। कुछ पुजारी और कुछ वैद्य को जरूरी बता रहे थे। किसी ने राजा के लिए सबसे अधिक आवश्यक सैनिकों को माना।



तीसरे प्रश्न के भी कई उत्तर थे। कुछ लोगों ने ज्ञान-विज्ञान को सबसे जरूरी कार्य बताया तो कुछ ने रणनीति और किसी ने दान-धर्म को।

सारे उत्तर अलग-अलग थे। राजा को एक भी उत्तर सही नहीं लगा। राजा ने सुना था कि पास के जंगल में वर्षों से एक साधु तप कर रहे हैं। वे केवल साधारण जनों से मिलते

हैं। उनके ज्ञान की चर्चा दूर-दूर तक थी। अपने सवालों का जवाब पाने के लिए राजा ने उनसे मिलने का निश्चय किया।

दूसरे दिन राजा ने राजसी वस्त्र उतारकर साधारण कपड़े पहने। कुछ अंगरक्षकों को साथ ले लिया। घोड़े पर सवार होकर राजा जंगल की ओर चल दिया। काफी देर बाद पेड़ों के झुरमुट में उसे साधु की झोपड़ी दिखाई दी। राजा घोड़े से उतर गया। उसने अंगरक्षकों को वहीं खड़े रहने का आदेश दिया और पैदल ही साधु के पास पहुँचा।

राजा ने देखा साधु बड़ी लगन से झोपड़ी के सामने की जमीन खोद रहे थे। उनका शरीर दुबला-पतला था। कुदाल से खोदते समय वे जोर-जोर से साँस ले रहे थे। राजा को पास आता देखकर साधु रुक गए। उन्होंने राजा का अभिवादन किया, फिर अपने काम में लग गए।

राजा बोला, "मैं आपके पास अपने कुछ प्रश्नों के उत्तर पाने की आशा में आया हूँ। मेरा पहला प्रश्न है, किसी काम की शुरुआत करने के लिए सही समय कौन सा है? दूसरा, मुझे किन लोगों की जरूरत सबसे ज्यादा है? मुझे किन पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए? और तीसरा, मुझे कैसे पता लगे कि सबसे आवश्यक कार्य क्या है? मुझे सबसे पहले क्या करना चाहिए?"

सवाल सुनकर भी साधु ने कोई जवाब नहीं दिया। वे काम में जुटे रहे।

राजा कुछ देर चुपचाप खड़ा देखता रहा। साधु कुदाल चलाते, मिट्टी हटाते और हँसते। यह देख राजा का मन पसीज उठा। वह बोला, "आप कुदाल मुझे दीजिए। कुछ देर खोद दूँ।"

साधु ने चुपचाप कुदाल उसे थमा दी। खुद जमीन पर एक तरफ बैठ गए। एक घंटा बीता, दूसरा घंटा बीता। राजा खोदता रहा। सूरज पेड़ों के पीछे छिपने लगा। तब कुदाल एक तरफ रखकर राजा साधु से बोला, "मैं आपके पास तीन प्रश्न लेकर आया हूँ। आपने मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया। यदि आप मेरे एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं जानते तो मुझे बताएँ। मैं लौट जाऊँगा।"



इतना सुनकर भी साधु चुप रहे। तभी किसी के दौड़कर आने की आवाज सुनाई दी। साधु ने कहा, "आओ, देखते हैं, कौन आया है?" राजा ने मुड़कर

देखा। एक आदमी दौड़ता हुआ वहीं आ रहा था। वह दर्द से कराह रहा था। उसके पेट से खून बहकर पैरों पर गिर रहा था। राजा के पास आकर वह कुछ बुदबुदाया और बेहोश हो गया। राजा और साधु ने मिलकर उसे भूमि पर लिटाया। उसके कपड़े ढीले किए। उसके पेट में बहुत बड़ा घाव हो गया था। राजा ने उसका घाव धोकर पट्टी बाँधी। पर वह पट्टी खून से भीग गई। राजा ने फिर से खून साफ किया और दूसरी पट्टी बाँधी। दो-तीन बार पट्टियाँ बदलीं। तब कहीं खून बहना बंद हुआ। उस आदमी की चेतना लौटी तो उसने पानी माँगा। राजा ने ताज़ा पानी लाकर उसे पिलाया।

संध्या हो गई थी। हवा भी ठंडी हो चली थी। बाहर लेटा हुआ आदमी ठंड से काँप उठा। राजा और साधु ने मिलकर उसे झोपड़ी के भीतर सुलाया। वह आँखें बंद किए चुपचाप बिस्तर पर लेटा रहा। यह सब करते-करते राजा बहुत थक गया था। देहरी पर बैठते ही वह गहरी नींद में सो गया। दूसरे दिन सुबह उसकी आँख खुली। पहले तो उसे समझ में नहीं आया कि वह कहाँ है? सामने लेटा हुआ बीमार आदमी कौन है? वह उसे एकटक देखता रहा।



धीमी आवाज में उस आदमी ने राजा से कहा, "मुझे माफ कर दीजिए।" राजा पहले तो अचकचाया, फिर बोला, "मैं तुम्हें नहीं जानता। तुम मुझसे माफी क्यों माँग रहे हो?"

"आप मुझे नहीं जानते, मैं आपको जानता हूँ। मैं आपका शत्रु हूँ। आपने मेरे भाई को फाँसी की सजा सुनायी थी। उसकी संपत्ति जब्त कर ली थी। मैंने तभी आपसे प्रतिशोध लेने की कसम खाई थी। मुझे मालूम हुआ आप साधु के पास अकेले आए हैं। मैंने सोचा था, जब आप वापस लौटेंगे तब मैं आपकी हत्या कर दूँगा लेकिन पूरा दिन बीतने पर भी आप नहीं लौटे। जब मैं आपको खोजता हुआ इस तरफ आ रहा था आपके अंगरक्षकों ने मुझे पहचान लिया। उन्होंने मुझे मारने की कोशिश की पर मैं बच गया। अगर आपने मेरी मरहम-पट्टी न की होती तो मैं मर ही गया होता। आपने मेरी जान बचाई है। अगर मैं जीवित बचा और आपने चाहा तो जीवनभर आपकी सेवा करूँगा। मुझे क्षमा करें।"

सारी बात सुनकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि शत्रु इतनी आसानी से मित्र बन सकता है। राजा ने उसे क्षमा कर दिया। उसे विश्वास दिलाया कि लौटकर वह उसकी देखभाल का पूरा इंतजाम करेगा।

राजा झोपड़ी से बाहर आया। साधु के पास जाकर बोला, "मैं अंतिम बार आपसे अपने सवाल का हल माँग रहा हूँ।"

साधु घुटनों के बल बैठे उन क्यारियों में बीज बो रहे थे जिन्हें कल तैयार किया गया था। साधु ने सिर उठाकर राजा से कहा, "राजन्, तुम्हें तुम्हारे सवालों के जवाब मिल चुके हैं।"

राजा हैरान हुआ। उसने कहा, "मैं समझ नहीं।"

साधु बोला, "क्या तुम्हें मालूम नहीं? तुम समझ नहीं सके? अगर कल तुम्हारे मन में मेरे लिए दया न आई होती तो तुम चले गए होते। तुमने ये क्यारियाँ तैयार न की होतीं तो राह में यह आदमी तुम पर हमला करता। मेरे पास न रुकने के लिए तुम पछताते।"



"जब तुम क्यारियाँ तैयार कर रहे थे, वही सबसे सही समय था। तब सबसे महत्व आदमी मैं था। उस समय मेरा काम सबसे जरूरी काम था।"

"जब वह आदमी दौड़कर हमारे पास आया और हमने उसकी मरहम-पट्टी की, वही सबसे सही समय था। अगर तुम उसकी मरहम-पट्टी न करते तो उसकी मृत्यु हो जाती। इसलिए उस समय वही सबसे महत्व का आदमी था। तुमने उसके लिए जो भी किया, उस समय वही तुम्हारा सबसे जरूरी कार्य था।"

"याद रखना, सबसे सही समय वही होता है जब हमारे पास किसी भी तरह की शक्ति होती है। सबसे महत्व का आदमी वह होता है जिसके साथ हम होते हैं। कोई नहीं जानता कब क्या होगा। सबसे जरूरी काम है, अपने सामने संकट में पड़े आदमी की सहायता करना। हमें जीवन इसलिए है कि दूसरों के काम आएँ। इसी में जीवन की सफलता है।" इतना कहकर साधु चुप हो गए।

साधु का उत्तर पाकर राजा को संतोष हुआ। राजा ने आदर से उनको प्रणाम किया और उनसे विदा लेकर अपने महल की ओर चल पड़ा।

— लिओ टॉलस्ट



लिओ टॉलस्टाय (सन् 1828-1910) प्रख्यात रूसी लेखक थे। इन्होंने अनेक विश्वप्रसिद्ध कथा एवं उपन्यास लिखे जिनमें मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण हुआ है।



अभ्यास



शब्दार्थ

यथेष्ट	=	भरपूर, जितना चाहिए उतना
सलाहकार	=	सलाह या राय देने वाला
अंगरक्षक	=	सुरक्षा के लिए नियुक्त सिपाही
प्रतिशोध	=	बदला लेने की भावना से किया जाने वाला काम
मन पसीज उठा	=	मन में दया का भाव उत्पन्न हुआ
रणनीति	=	युद्धनीति



1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए -

- (क) राजा के मन में उठने वाले तीन सवाल क्या थे ?
- (ख) राजा ने साधु से मिलने के लिए क्या किया ?
- (ग) राजा का शत्रु उनका मित्र कैसे बन गया ?
- (घ) घायल व्यक्ति ने होश आने पर अपने बारे में राजा से क्या बताया ?
- (ङ) राजा को अपने प्रश्नों के क्रमशः क्या-क्या उत्तर मिले ?

2. सोच - विचार : बताइए -

- (क) राजा की जगह तुम होते तो -
 - साधु की कुटिया पर पहुँचकर क्या करते ?
 - घायल व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करते ?
- (ख) आपके लिए सबसे जरूरी काम क्या है ? इसे आप कैसे पूरा करेंगे ?

3. अनुमान और कल्पना -

यदि साधु ने तुरंत सीधे-सीधे प्रश्नों का उत्तर दे दिया होता तो क्या होता ?

4. भाषा के रंग-

- (क) नीचे लिखे उपसर्गों को जोड़कर शब्द बनाइए -

जैसे -	प्रति + शोध = प्रतिशोध	अनु + चर = अनुचर
	प्रति + कूल =	अनु + करण =
	+ वाद =	+ कूल =
	+ दिन =	+ वाद =
	+ घात =	+ रूप =

- (ख) नीचे लिखे अनुच्छेद में उचित स्थान पर विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

सारे उत्तर अलग अलग थे राजा को एक भी उत्तर सही नहीं लगा वह साधु के पास गया उसने देखा साधु बड़ी लगन से जमीन खोद रहे हैं पास जाकर राजा ने कहा मैं आपके पास अपने प्रश्नों के उत्तर पाने की आशा में आया हूँ मेरा पहला प्रश्न है किसी कार्य को शुरू करने का सही समय कौन सा है



(ग) स्तम्भ 'क' में 'उपसर्ग' तथा स्तम्भ 'ख' में 'शब्द' दिए गए हैं। जोड़कर सार्थक शब्द बनाइए—

उपसर्ग
अप, अव, आ, निर्, प्र, सु

शब्द
जीवन, मान, गुण, यश हरण, तार, बल, गमन, मल, दोष, आदर, हार, लेख, ख्यात, गम, पुत्र

वे शब्दांश जो मूल शब्द के पहले जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं, जैसे : अति+अधिक = अत्यधिक

(घ) दिए गए शब्दों के समानार्थक शब्दों को अक्षर-जाल से खोजिए। इन्हें ऊपर से नीचे तथा बाएँ से दाएँ ढूँढ़ सकते हैं —

पा	घो	र	पं	क	ज
व	ड़ा	सा	ज	न	क
क	म	ल	ल	क	ता
ग	न	र	ध	ज	रा
ग	नी	र	र	ल	प
न	भ	अ	म्ब	र	ति

चंद्रमा =
अग्नि =
अश्व =
आकाश =
आम =
मनुष्य =
पानी =
कमल =
सोना =
पिता =
बादल =

(ङ) विभा का काम देखकर माँ का चेहरा खुशी से खिल उठा।

‘खुशी से खिल उठा’ मुहावरा है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा सुंदर बन जाती है और पढ़ने वाले को आनंद आता है। रिक्त स्थानों पर उचित मुहावरों का प्रयोग कीजिए—
(घोड़े बेचकर सोना, हाथ-पैर फूलना, दाँतों तले उँगली दबाना, सिर पर पैर रखकर भागना, पेट में चूहे कूदना)।

- सिपाही को देखकर चोर
- अचानक सामने शेर को देखकर उसके
- पकवानों की महक नाक में आते ही
- नट को पतली रस्सी पर चलते देखकर लोगों ने
- परीक्षा समाप्ति के दिन वह



(घ) नीचे दिए गए वाक्यों में से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण शब्दों को छाँटकर निर्धारित खानों में लिखिए -

- रसोइये ने अपनी मैली धोती नहीं बदली।
- क्या आप मेरी बड़ी बहन से मिली हैं ?
- जो परिश्रम करेगा वही मीठे फल खाएगा।
- वह धीरे-धीरे नदी के किनारे पहुँचा।
- छोटा बच्चा जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया	क्रिया विशेषण शब्द

5. तुम्हारी कलम से

- साधु की जीवन शैली पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए ।

6. अब करने की बारी

- पेड़-पौधों के बीच एक झोपड़ी का चित्र बनाइए ।

7. मेरे दो प्रश्न : कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.
2.

8. इस कहानी से -

- (क) मैंने सीखा -
- (ख) मैं करूँगी / करूँगा -

